॥ श्री संकटनाशन गणेशस्तोत्रं ॥

(स्वामी रूपेश्वरानन्द आश्रम द्वारा संशोधित)

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये ॥ १॥

॥स्तोत्र पाठ आरम्भ॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥ २॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥ ३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ ४॥

॥फलश्रुतिः ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरः प्रभुः ॥ ५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥ ६॥
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥ ७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥ ८॥

॥ इति श्रीनारदपुराणे संकटनाशनं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सिद्धि विधान:

- **साधना आरंभ:** भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि अथवा किसी भी माह की चतुर्थी तिथि या किसी भी बुधवार से।
- **समय:** प्रातः सूर्योदय, दोपहर अथवा रात्रि।
- **पाठ संख्या:** 11, 21, 51, 108 अथवा यथाशक्ति)
- **दिन:** 11, 21, 41 दिन (दिन कम करने हो तो अधिक संख्या में पाठ करें)
- **भोग:** घर में बनी शुद्ध मिठाई (लड्डू) अथवा सात्विक भोजन।
- **दिशा:** प्रातः काल में पूर्व या उत्तर और रात्रि काल में पश्चिम।
- **वस्त्र:** लाल अथवा कोई भी।
- **आहार:** पूर्ण रूप से सात्विक भोजन सामान्य रहेगा इसमें लहसुन प्याज़ के सेवन से भी दूर रहना चाहिए। रात्रि भोजन का त्याग करें साधना काल में।
- **संकल्प एवम् संक्षिप पूजन:** षट्कर्म के उपरांत अपने गुरु एवं इष्ट का ध्यान करें एवं संकल्प बोलें। गणेश जी का संक्षिप्त पूजन करें धुप, दीप, पुष्प भोग आदि अर्पित करें।
- पाठ समाप्त होने पर क्षमा प्रार्थना करें।
- **पाठ संख्या:** यह स्तोत्र 1000 पाठ करने से सिद्ध होता है। विशेष सिद्धि के लिए 10000 पाठ कर सकते हैं।

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम, बलुआ , जिला - चंदौली (उत्तर प्रदेश)
Mobile No. : 7607 233 230 https://swamirupeshwaranand.in/